8

मणि-कांचन संयोग

डॉ. अच्युत शर्मा

वैष्णव-गुरु श्रीमंत शंकरदेव और शाक्त माधवदेव का महामिलन असम के सांस्कृतिक इतिहास की कदाचित् सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। इस अतुल्य घटना से एक ओर दोनों महान विभूतियों के जीवन और कर्म प्रभावित हुए तो दूसरी ओर इसके परिणामस्वरूप असम-भूमि का सांस्कृतिक जीवन व्यापक रूप से संजीवित हो उठा। प्रस्तुत लेख में इस महामिलन की पृष्ठभूमि में घटित घटनाओं का सजीव एवं रोचक वर्णन किया गया है। श्री माधवदेव की मातृ-भक्ति, बलि-विधान की असारता, पूर्ण समर्पण पर पर आधारित भक्ति की महत्ता, गुरु-शिष्या का पवित्र संबंध जैसी बातें इस लेख में मूर्त हो उठी हैं।

महाबाहु ब्रह्मपुत्र की गोद में बसा विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है माजुलि। इसी में स्थित है धुवाहाता-बेलगुरि नामक वह पवित्र स्थान, जहाँ एकशरण भागवती वैष्णव धर्म के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव (ई. 1449-1568) और परम शाक्त माधवदेव (ई. 1489-1596) का महामिलन हुआ था। यह महामिलन मध्ययुगीन असम की ही नहीं, अपितु असम-भूमि के संपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास की संभवतः

सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। उन दिनों संत शंकरदेव शक्ति की उपासना, तंत्र-मंत्र, बलि-विधान एवं अनेकानेक कठोर धार्मिक बाह्याचारों से जकड़े हुए असमीया समाज को मुक्ति का नया पथ दिखाने तथा उसे आध्यात्मिक उन्नति के सरलतम मार्ग पर ले चलने के महान प्रयास में जुटे हुए थे। ऐसी स्थिति में योग्य गुरु शंकर को योग्य शिष्य माधव मिल गए।

शंकर-माधव का मिलन पावन असम-भूमि के लिए सोने में सुगंध-जैसा साबित हुआ। इस मिलन से भारतवर्ष के इस पूर्वोत्तरी भू-खंड में भागवती वैष्णव-धर्म अथवा एकशरण नाम-धर्म के प्रचार-प्रचार-कार्य में एक अद्भुत गति आ गई थी। शंकर-माधव के सम्मिलित प्रयास से इस पावन कार्य में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोत्तरी होने लगी थी। सांसारिक जीवन में शंकर-माधव मामा-भांजे थे, पर इस महामिलन के उपरांत दोनों गुरु-शिष्य के पवित्र बंधन में बंध गए थे। इसका साक्षी बना था ब्रह्मा का वरद पुत्र ब्रह्मपुत्र नद। महाशक्ति का आगार ब्रह्मपुत्र अपनी गोद में मामा-भांजे को गुरु-शिष्य बनते देखकर अत्यंत हर्षित हो उठा था। उसने इस महामिलन के उमंग-रस को बंगाल की खाड़ी से होकर हिंद महासागर तक पहुँचाने के लिए अपनी लोहित जल-धारा को आदेश दिया था।

असमीया साहित्य के समर्थ हस्ताक्षर रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने शंकर-माधव के महामिलन को 'मणि-कांचन संयोग' की आख्या से अभिहित किया है। इस महामिलन की भूमिका के रूप में घटित घटनाएँ बड़ी ही रोचक हैं।

श्रीमंत शंकरदेव की चचेरी बहन मनोरमा और बहनोई गोविन्द गिरि अथवा दीघल-पुरीया गिरि के सुयोग्य पुत्र थे माधवदेव। अपनी सारी पैत्रिक संपत्ति कोचबिहार की पश्चिमी सीमा पर स्थित बांडुका में बसे

बड़े भाई दामोदर को सौंपकर माधवदेव जब भांडारीडुबि या टेंबुवानि की ओर वापस आ रहे थे तो उनको खबर मिली कि उनकी माँ सख्त बीमार हैं। भांडारीडुबि में बहन उर्वशी और बहनोई रामदास के पास रहनेवाली अपनी विधवा माँ के स्वास्थ्य को लेकर माधवदेव अत्यंत चिंतित हो उठे। उन्होंने तुरंत मनौती मानी 'हे देवी गोसानी! तुम्हें सफेद बकरों का एक जोड़ा भेंट करूँगा। माँ को शीघ्र स्वस्थ कर दो।'

माधवदेव जब बहनोई रामदास के घर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि देवी गोसानी की कृपा से उनकी माँ स्वस्थ होने लगी थीं। यह देखकर माधवदेव की जान में जान आई। उन्होंने मन ही मन देवी माता को प्रणाम करके उनके प्रति अकृत्रिम कृतज्ञता प्रकट की। थोड़ी ही दिनों में माँ पूरी तरह स्वस्थ हो उठीं तो माधवदेव ने मनौती के अनुसार सफेद बकरों का एक जोड़ा खरीद कर रखने के लिए बहनोई रामदास से अनुरोध किया। इसके लिए आवश्यक धन देकर माधवदेव व्यापार के लिए निकल पड़े।

व्यापार से वापस आकर माधवदेव ने बहनोई रामदास से बकरों की बात पूछी तो रामदास ने उत्तर दिया- 'मोल-भाव करके बकरों को मालिक के पास ही रख छोड़ा है।' देवी-पूजा के दिन एकदम निकट आ गए तो माधवदेव ने बकरों को ले आने का प्रस्ताव रखा। तब बहनोई रामदास ने उत्तर दिया- 'बकरे लाकर क्या करोगे? इस लोक में बकरा काटनेवाले को उस लोक में बकरे के हाथों कटना पड़ता है।' क्रोधित होकर माधवदेव ने बकरे न खरीदने का कारण पूछा तो रामदास ने पुनः कहा- 'बलि चढ़ाना विनाशकारी कार्य है। उससे किसकी प्राप्ति होगी? दूसरी जीव की हत्या बेकार ही तुम क्यों करोगे?'

गुरु शंकरदेव से मिली ज्ञान-ज्योति के बल पर रामदास ने माधवदेव को बहुत समझाया, पर उन बातों से माधवदेव जरा भी प्रभावित नहीं

हुए, बल्कि उनका ज्ञान-दंभ जाग उठा। बड़ी दृढ़ता से वे बहनोई साहब से बोले- 'अब तक मैंने कितने ही धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है। तुम्हारी कही हुई बातें तो कहीं नहीं मिली हैं। सबमें बलि-विधान का ही निर्देश है। तुम्हें किस शास्त्र में ऐसी बातें मिली हैं'-जरा मुझे भी तो बताओ।'

माधवदेव के ज्ञान-दंभ से रामदास थोड़ा आहत हुए, पर अप्रसन्नता व्यक्त किए बिना ही बोले - 'तुम और हम क्यों ऐसे ही शास्त्रार्थ करें ? भोजन के बाद चलो उनके पास ही चलें, जिनसे हमने ये बातें सुनी हैं। उनके सामने तुम बोल भी न पाओगे। वे एक ही बात से तुम्हें निरुत्तर कर देंगे।' माधवदेव का ज्ञान-दंभ इतना बढ़ रहा था कि फौरन चलने को तैयार हुए और बोले - 'चलो, उनके पास ही चलें, शास्त्रार्थ में मुझे कैसे निरुत्तर करते हैं, वह तो देखें।' उस समय सूरज डूबने को हो रहा था, अतः अगले दिन सबेरे ही चलने की बात तय हुई।

अगले दिन भोर में ही रामदास और माधवदेव धुवाहाता-बेलगुरि सत्र में श्रीमंत शंकरदेव के पास पहुँचे। आंगन में विराजमान शंकरदेव को प्रणाम करने के पश्चात् दोनों एक ओर बैठ गए। रामदास ने बकरों की बलि वाले प्रसंग को शंकर गुरु से यह भी कहा- 'माधवदेव आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आया है।' यह सुनकर शंकर गुरु मुस्कराए और रामदास से माधवदेव का विस्तृत परिचय पूछा। रामदास ने कहा- 'यह दीघल-पुरीया गिरि का पुत्र माधव है।'

माधवदेव का परिचय पाकर शंकरदेव बड़े ही प्रसन्न हुए। अपना भांजा इतना बड़ा और गुणी-ज्ञानी बन गया है, यह जानकर उनका हृदय पुलकित हो उठा। उन्होंने अपने योग्य भांजे की शास्त्रार्थ-प्यास बुझानी चाही। दोनों में शास्त्रार्थ होने लगा। शंकरदेव निवृत्ति-मार्ग के पक्ष में और माधवदेव प्रवृत्ति-मार्ग के पक्ष में विविध शास्त्रों से प्रमाण प्रस्तुत करते

रहे। शास्त्रार्थ चलता रहा, सूर्य ढलने लगा, पर शास्त्रार्थ समाप्त नहीं हुआ। कोई भी कम नहीं थे। अंत में श्रीमंत शंकरदेव ने 'भागवत' के निम्नोक्त श्लोक को उद्धृत किया तो माधवदेव निरुत्तर हो गए -

'यथा तरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कंधभुजोपशाखाः।
प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां तथैव सर्वार्च्चनमच्युतेभ्यः॥' (4/39/24)

यानी, जिस प्रकार वृक्ष के मूल को सींचने से टहनियाँ, पत्ते, फूल, फल सब संजीवित होते हैं अथवा अन्न-ग्रहण के जरिए प्राण का पोषण करने से मानव-शरीर की सारी इंद्रियाँ तृप्त होती हैं, उसी प्रकार परब्रह्म कृष्ण की उपासना करने से सारे देवी-देवता अपने-आप संतुष्ट हो जाते हैं।

ज्ञानी माधवदेव ने ध्यानपूर्वक इस पुण्य-श्लोक को सुना, इस पर चिंतन-मनन किया, फिर निष्कर्ष पर पहुँचे कि शंकरदेव का मत ही पूर्णतः तर्क-सम्मत एवं सत्य है। उनका ज्ञान-दंभ पूर्णतः दूर हुआ। वे भलीभाँति समझ गए कि परब्रह्म कृष्ण ही एक मात्र आराध्य देव हैं - **'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'** उनकी शरण में ही जीवों का कल्याण निहित है। कृष्ण-संबंधी ज्ञान-भक्ति के दाता श्रीमंत शंकरदेव को गुरु मानकर माधवदेव ने तुरंत गद्गद् चित्त से प्रणाम किया। अब शंकरदेव अत्यधिक आनंद के साथ भागवत के पूर्वोक्त श्लोक का अर्थ विस्तारपूर्वक बताने लगे। उनकी अमृतोपम वाणी सुनकर माधवदेव आह्लादित हो उठे।

दूसरे ही दिन प्रभात बेला में माधवदेव ने विधिपूर्वक शंकरदेव को गुरु मानकर कृष्ण के चरणों में शरण ले ली। शंकरदेव ने माधवदेव को शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया और आनंदमग्न होकर वे बोल उठे- 'तुम्हें पाकर आज मैं पूरा हुआ।' सचमुच आगे चलकर शंकरदेव और माधवदेव एक-दूसरे के पूरक बने।

शंकर-माधव के मिलनोपरांत एकशरण नाम-धर्म का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ता गया और कृष्ण-भक्ति की धाराएँ जन-मन को भिगोती हुई चारों दिशाओं में बहने लगीं। माधवदेव ने कृष्ण-भक्ति, गुरु-भक्ति और एकशरण नाम-धर्म के प्रचार-प्रसार-कार्य में अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया। अतः माधवदेव शंकर गुरु के प्रिय शिष्य ही नहीं रहे, अपितु 'माधव-बांधव' बन गए। इसीलिए श्रीमंत शंकरदेव ने अपने पुत्र रामानंद और हरिचरण के बदले पूर्ण योग्यता के आधार पर माधवदेव को धर्म-गुरु मनोनीत किया। 1568 ई. के भाद्र महीने में शंकर गुरु के तिरोभाव के पश्चात् माधवदेव ने धर्म-गुरु का गुरु-भार संभाला। आपने 1596 ई. के भाद्र महीने में अपने तिरोभाव के समय तक इस दायित्व को कुशलतापूर्वक निबाहा।

अतः हम कह सकते हैं कि पवित्र स्थान धुवाहाता-बेलगुरि में हुए दोनों महापुरुषों के महामिलन ने असम के सांस्कृतिक इतिहास में एक सुनहरे अध्याय का श्रीगणेश कर दिया था। भक्ति-धर्म के प्रचार-कार्य में श्री माधवदेव का सहयोग पाने के पश्चात् श्रीमंत शंकरदेव अधिक उन्मुक्त भाव से साहित्य-सृष्टि, संगीत-रचना आदि के जरिए असमीया भाषा-साहित्य-संस्कृति को परिपुष्ट बनाने में सक्षम हुए। उन्होंने 'कीर्तन-घोषा', 'गुणमाला', 'भक्ति-प्रदीप', 'हरिश्चंद्र उपाख्यान', 'रुक्मिणी-हरण काव्य', 'बलिछलन', 'कुरुक्षेत्र' आदि काव्य-रचनाएँ की हैं। आपने 'पत्नीप्रसाद', 'कालियदमन', 'केलिगोपाल', 'रुक्मिणी-हरण', 'पारिजात-हरण' और 'रामविजय' नामक छह अंकीया नाट भी रचे हैं। कहा जाता है कि उन्होंने बारह कोड़ी 'बरगीत' भी रचे थे, जिनमें से लगभग पैंतीस बरगीत ही आज उपलब्ध हैं।

इसी प्रकार योग्य गुरु से असीम प्रेरणा पाने के कारण श्रीश्री माधवदेव भी अपनी अनमोल देन से असमीया समाज को हमेशा के लिए गौरव के अधिकारी बनाने के काम में सफल प्रमाणित हुए।

आपकी काव्य-रचनाओं में 'नामघोषा', 'जन्मरहस्य', 'राजसूय', 'भक्ति रत्नावली' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपने 'चोर-धरा', 'पिंपरा-गुचोवा', 'भोजन-बिहार', 'भूमि-लेटोवा', 'दधि-मंथन' आदि नाटक भी रचे हैं। गुरु की आज्ञा से आपने नौ कोड़ी ग्यारह बरगीत भी रचे, जिनमें से लगभग एक सौ इक्यासी बरगीत आज उपलब्ध हैं।

असमीया जाति शंकरगुरु और माधवगुरु दोनों की आभा से उद्भाषित है। जिस प्रकार धरती के लिए सूर्य और चाँद की किरणों का अपना-अपना महत्व है, उसी प्रकार महान असमीया समाज के लिए शंकर-भास्कर और माधव-मृगांक की प्रतिभाएँ अपने-अपने ढंग से कल्पतरु के समान कल्याणकारी हैं। उत्तर भारतीय समाज में 'रामचरितमानस' का आदर जितना है, असमीया समाज में 'कीर्तनघोषा-नामघोषा' का भी आदर उतना ही है।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. धुवाहाता-बेलगुरि नामक पवित्र स्थान कहाँ स्थित है?
   (क) बरपेटा में (ख) माजुलि में
   (ग) पाटबाउसी में (घ) कोचबिहार में
2. शंकरदेव के साथ शास्त्रार्थ से पहले माधवदेव थे -
   (क) शाक्त (ख) शैव (ग) वैष्णव (घ) सूर्योपासक
3. सांसारिक जीवन में शंकरदेव और माधवदेव का कैसा संबंध था?
   (क) चाचा-भीतजे (ख) भाई-भाई का
   (ग) मामा-भांजे का (घ) मित्र-मित्र का

4. शंकरदेव के मुँह से किस ग्रंथ का श्लोक सुनकर माधवदेव निरुत्तर हो गए थे?

(क) 'गीता' का (ख) 'रामायण' का

(ग) 'महाभारत' का (घ) 'भागवत' का

2. किसने किससे कहा, बताओ :

(क) 'माँ को शीघ्र स्वस्थ कर दो।'

(ख) 'बलि चढ़ाना विनाशकारी कार्य है।'

(ग) 'अब तक मैंने कितने ही धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है।'

(घ) 'वे एक ही बात से तुम्हें निरुत्तर कर देंगे।'

(ङ) 'यह दीघल-पुरीया गिरि का पुत्र माधव है।'

3. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप माजुलि कहाँ बसा हुआ है?

(ख) श्रीमंत शंकरदेव का जीवन-काल किस ई. से किस ई. तक व्याप्त है?

(ग) शंकर-माधव का मिलना असम-भूमि के लिए कैसा साबित हुआ?

(घ) महाशक्ति का आगार ब्रह्मपुत्र क्या देखकर अत्यंत हर्षित हो उठा था?

(ङ) माधवदेव को शिष्य के रूप में स्वीकार कर लेने के बाद शंकरदेव क्या बोले?

(च) किस घटना से असम के सांस्कृतिक इतिहास में एक सुनहरे अध्याय का श्रीगणेश हुआ था?

4. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) ब्रह्मपुत्र नद किस प्रकार शंकरदेव-माधवदेव के महामिलन का साक्षी बना था?

(ख) धुवाहाटा-बेलगुरि सत्र में रहते समय श्रीमंत शंकरदेव किस महान प्रयास में जुटे हुए थे?

(ग) माधवदेव ने कब और क्या मनौती मानी थी?

(घ) 'इसके लिए आवश्यक धन देकर माधवदेव व्यापार के लिए निकल पड़े।' - प्रस्तुत पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट करो।

(ङ) 'माधवदेव आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आया है।' - किसने किससे और किस परिस्थिति में ऐसा कहा था?

5. **संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) शंकर-माधव के महामिलन के संदर्भ में 'मणि-कांचन संयोग' आख्या की सार्थकता स्पष्ट करो।

(ख) बहनोई रामदास के घर पहुँचने पर माधवदेव ने क्या पाया और उन्होंने क्या किया?

(ग) रामदास ने बलि-विधान के विरोध में माधवदेव से क्या-क्या कहा?

(घ) शास्त्रार्थ के दौरान शंकरदेव द्वारा उद्धृत 'भागवत' के श्लोक का अर्थ सरल हिन्दी में प्रस्तुत करो।

(ङ) शंकरदेव की साहित्यिक देन के बारे में बताओ।

(च) माधवदेव की साहित्यिक देन को स्पष्ट करो।

6. **सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :**

(क) माधवदेव की माँ की बीमारी के प्रसंग को सरल हिन्दी में वर्णित करो।

(ख) बलि हेतु बकरे खरीदने को लेकर रामदास और माधवदेव के बीच हुई बातचीत को अपने शब्दों में प्रस्तुत करो।

(ग) रामदास और माधवदेव गुरु शंकरदेव के पास कब और क्यों गए थे?

(घ) शंकरदेव और माधवदेव के बीच किस बात पर शास्त्रार्थ हुआ था? उसका क्या परिणाम निकला?

(ङ) शंकर-माधव के महामिलन के शुभ परिणाम किन रूपों में निकले?

7. **प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभ 100 शब्दों में) :**

(क) 'ऐसी स्थिति में योग्य गुरु शंकर को योग्य शिष्य माधव मिल गए।'

(ख) 'उसने इस महामिलन के उमंग-रस को बंगाल की खाड़ी से होकर हिंद महासागर तक पहुँचाने के लिए अपनी लोहित जल-धारा को आदेश दिया था।'

(ग) 'उत्तर भारतीय समाज में 'रामचरितमानस' का आदर जितना है, असमीया समाज में 'कीर्त्तनघोषा-नामघोषा' का भी आदर उतना ही है।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के लिए एक-एक शब्द दो :

विष्णु का उपासक, शक्ति का उपासक, शिव का उपासक, जिसकी कोई तुलना न हो, संस्कृति से संबंधित, बहन के पति, जिस स्त्री का पति मर गया हो, ऐसा व्यक्ति, जो शास्त्र जानता हो

(ख) निम्नांकित शब्दों से प्रत्ययों को अलग करो :

मनौती, वार्षिक, कदाचित्, बुढ़ापा, चचेरा, पूर्वोत्तरी, आध्यात्मिक, आधारित

(ग) निम्न लिखित शब्दों का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार करो, ताकि उनका लिंग स्पष्ट हो :

महामिलन, उपासना, बढ़ोत्तरी, मोल-भाव, विनती, वाणी, तिरोभाव, संस्कृति

योग्यता-विस्तार

(क) श्रीमंत शंकरदेव और श्रीश्री माधवदेव के जीवन-वृत्तों का अध्ययन करो।

(ख) शंकरदेव और माधवदेव की साहित्यिक देन के संदर्भ में अधिक जानकारी एकत्र करो।

(ग) अपने गुरुजी की सहायता से एकशरण भागवती वैष्णव धर्म की मूलभूत बातों को जानने का प्रयास करो।

(घ) बलि-विधान की निरर्थकता पर कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन करो।

(ङ) शंकर-माधव के महामिलन की तरह ही रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद का मिलन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय की मदद से इस मिलन के बारे में सम्यक् जानकारी प्राप्त करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

कदाचित्	= संभवतः, शायद
पावन	= पवित्र
सोने में सुगंध	= एक उत्ताम वस्तु में और एक उत्तम गुण का आ जाना
प्रयास	= चेष्टा
बढ़ोत्तरी	= वृद्धि
वरद	= शुभ, वर देने वाला
उमंग	= उत्साह, जोश
मनौती	= मन्नत
जान में जान आना	= राहत मिलना
फौरन	= तुरंत, शीघ्र ही
प्रवृत्ति	= सांसारिक बातों के प्रति झुकाव, आसक्ति
निवृत्ति	= सांसारिक बातों के प्रति विराग-भाव, अनासक्ति
तिरोभाव	= महापुरुष का देहावसान
कोड़ी	= बीस का समूह, बीसी
मृगांक	= चाँद, चंद्र